# 14 पूजा का फल

- परिचयात्मक प्रश्न - आप भगवान की पूजा बदले में कुछ प्राप्त करने के लालच में करते हैं या उनके प्रति कृतज्ञता व प्रेम प्रकट करने के लिए करते हैं?
- प्रतिबिंब - बालकों को लोभ व कृपणता से बचे रहने की प्रेरणा देना।
- परिकल्पना - क्या आपने भगवान के लोभी भक्त की कहानी सुनी है?

किसी गाँव में गणेशीलाल नाम के एक ब्राह्मण रहते थे। वे गणेशजी के बड़े भक्त थे। गाँव के बाहर एक तालाब था। तालाब के किनारे गणेशजी का एक मंदिर था। पंडित गणेशीलाल प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल वहाँ जाकर तालाब में स्नान करके गणेशजी की पूजा किया करते थे।

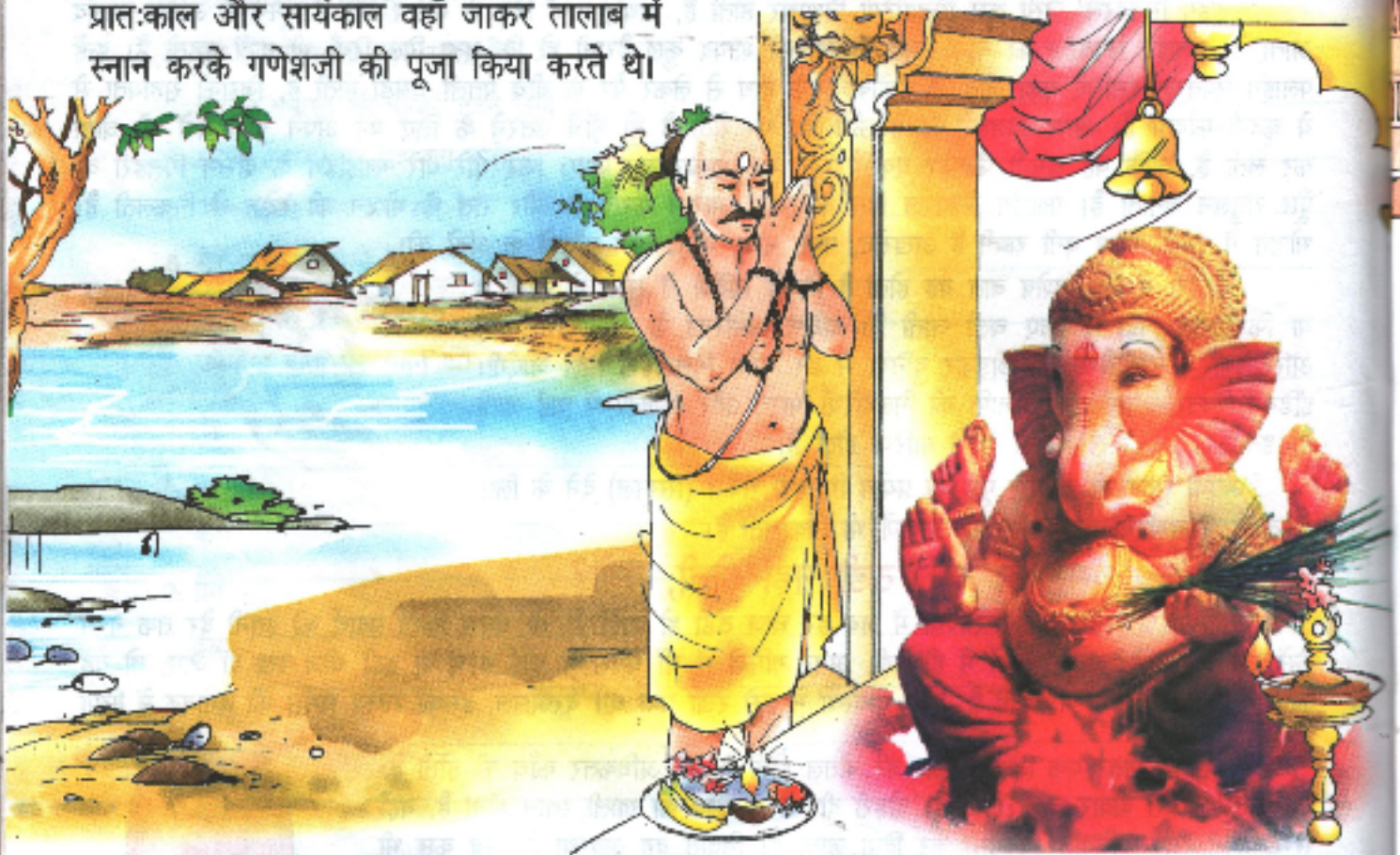

पंडितजी के घर में उनकी पत्नी और एक पुत्री थी। पुत्री की अवस्था ब्याह करने योग्य हो गई थी। पंडितजी की पत्नी बार-बार कहती थीं– 'बेटी सयानी हो गई है। अब इसके ब्याह की चिंता करो। इसके लिए कहीं लड़का ढूँढ़ो और कुछ रुपए जुटाओ।'

पंडितजी कहते थे– 'मैंने अब तक तो किसी के आगे हाथ फैलाया नहीं। मेरे स्वामी तो गणेशजी हैं। उनका सेवक बनकर मैं किसी दूसरे से भीख नहीं माँगूंगा उन्हें जो करना होगा, करेंगे। वे क्या मेरी बेटी को ब्याहने के लिए पाँच सौ रुपए नहीं दे सकते।'

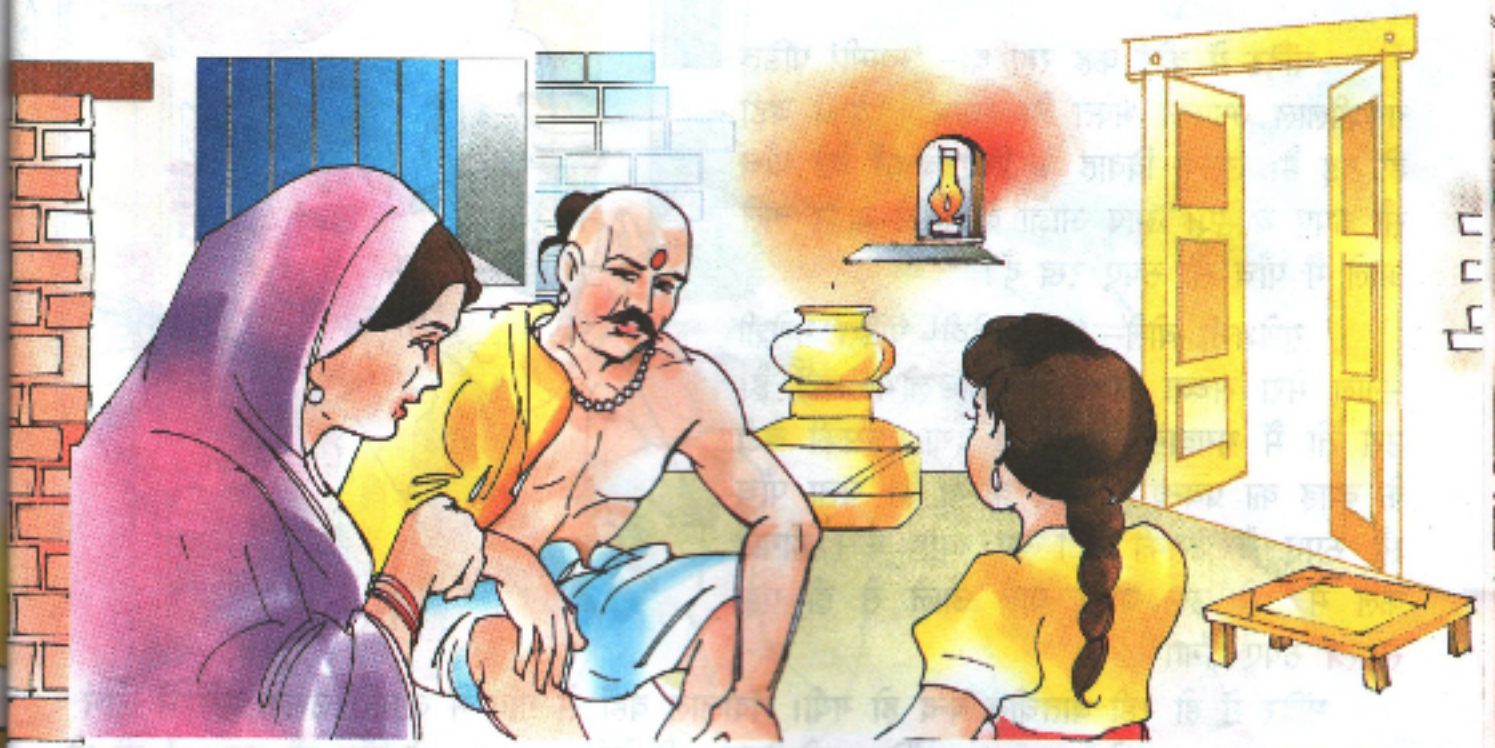

बात सच्ची थी। पंडितजी ने कभी किसी से कुछ नहीं माँगा था। वे न तो खेती करते थे, न नौकरी। उनकी कोई आमदनी भी नहीं थी। लेकिन गाँव के लोग उनका बहुत आदर करते थे। लोग उन्हें गणेशजी का भक्त समझकर उनके घर आटा, दाल आदि पहुँचा जाते थे। उनको बिना माँगे लोग थोड़ी-बहुत दक्षिणा भी दे जाते थे। लेकिन पंडितजी की पत्नी को यह नहीं लगता था कि बिना माँगे कोई पाँच सौ तो क्या पचास रुपए भी देगा।

उस गाँव में गेंदालाल नामक एक धनी व्यापारी भी रहता था। गेंदालाल बहुत चतुर था और बहुत कंजूस भी था। उसने बड़ी भारी हवेली बनवाई थी। उसके दरवाजे पर पक्का कुआँ था। खूब बड़ी उसकी दुकान थी। दुकान में कई नौकर थे। लेकिन वह इतना कृपण था कि भिखारी को दो मुट्ठी भीख भी नहीं देता था।

गेंदालाल भी प्रतिदिन दोनों समय गणेशजी की पूजा करने मंदिर जाता था। सवेरे वह तालाब में स्नान करता, तालाब का एक लोटा जल और वहीं लगे कनेर के पेड़ के दो-चार फूल गणेशजी को चढ़ा देता। शाम को गणेशजी के पास वह एक छोटा-सा दीपक अवश्य जला दिया करता था। उसे किसी ने बता दिया था कि गणेशजी की पूजा करने से बहुत धन मिलता है। रुपए पाने के लोभ से वह गणेशजी की पूजा किया करता था।

एक दिन गेंदालाल को कहीं बाहर जाना था। उसने अपने नौकर को कह दिया था कि शाम को गणेशजी के मंदिर में दीपक जला देना। गेंदालाल रात में देर से लौटा। तालाब और गणेशजी का मंदिर उसके मार्ग में ही पड़ता था। उसने सोचा कि आज सायं पूजा नहीं की है, चलो गणेशजी के दर्शन करते चलें। लेकिन मंदिर के पास आने पर उसे लगा कि मंदिर में कोई बातचीत कर रहा है। गेंदालाल छिपकर सुनने लगा।

मंदिर में कोई कह रहा था– 'स्वामी! पंडित गणेशीलाल आपका भक्त है। उसकी लड़की बड़ी हो गई है। उसके विवाह के लिए बेचारे को पाँच सौ रुपए चाहिए। आप आज्ञा दें तो मैं बाहर वाले आले में पाँच सौ रुपए रख दूँ?

गणेशजी बोले– 'ऋद्धि देवी! पंडित गणेशी-लाल मेरा सच्चा भक्त है। वह लोभी नहीं है। उसे तो मैं भगवान की भक्ति दूँगा। उसकी बेटी के ब्याह का प्रबन्ध भी मुझे करना है। भला पाँच सौ रुपए में उसकी बेटी का ब्याह कैसे होगा? कल मैं उसे उस बाहर वाले आले से ही एक सहस्त्र रुपए दूँगा।'

मंदिर में हो रही बातचीत बन्द हो गयी। गेंदालाल वहाँ से गाँव में आया। उसके मन में लोभ समा गया था। वह सोच रहा था- पंडित गणेशीलाल की बेटी का ब्याह तो पाँच सौ रुपए में भी हो जाएगा। उसे पाँच सौ रुपए देकर सौदा करने से पाँच सौ रुपये का लाभ होगा।

गेंदालाल सीधा पंडितजी के घर पहुँचा। उसने उन्हें पुकारकर किवाड़ खुलवाए। बड़ी विनम्रता से प्रणाम करके बोला- 'पंडितजी! आप गणेशजी के बड़े भक्त हैं। आपकी कन्या विवाह के योग्य हो गयी है। मुझे उसकी बड़ी चिंता है। मैं इसलिए आज इतनी रात को आपके पास आया हूँ। क्या पाँच सौ रुपये में आपकी पुत्री का विवाह हो जायेगा।'

पंडितजी बोले- 'हाँ, इतने रुपए में कन्या का विवाह आनंद से हो जाएगा।'

गेंदालाल ने तुरंत पाँच सौ रुपए के नोट गिनकर पंडितजी को दे दिए और बोला– 'पंडितजी! आप तो गणेशजी के भक्त हैं। पता नहीं गणेशजी आपको कब और क्या देते हैं? थोड़ा-सा प्रसाद कृपा करके मुझे भी दीजिए। मंदिर के भीतर आपको जो-कुछ मिले, वह मैं नहीं चाहता। कल मंदिर के बाहर वाले आले में जो-कुछ आपको मिले, आप मुझे दे दें। मैं ही कल उसे उठाऊँगा।'

पंडितजी सरलता से बोले -'मुझमें भक्ति कहाँ है? मेरे ऐसे भाग्य कहाँ हैं कि गणेशजी मुझे प्रसाद दें? मंदिर के बाहर वाले आले की ओर तो मैं कभी देखता ही नहीं। कल उसमें कुछ मिले तो वह तुम्हें ही गणेशजी ने कृपा करके दिया ऐसे ही समझना चाहिए।'

गेंदालाल प्रसन्न होकर बोला- 'बस, बात पक्की हो गई। कल मंदिर के बाहर वाले आले में जो मिले वह मेरा।'

पंडित जी ने कहा- 'हाँ भाई वह तो तुम्हारा ही होगा। मुझे उससे कोई मतलब नहीं।'

लोभ के मारे गेंदालाल को रात भर नींद ही नहीं आई। दूसरे दिन सवेरे वह उठा। अँधेरे में ही तालाब पर जाकर उसने स्नान किया। मंदिर में जाने पर बाहर वाले आले में कुछ है या नहीं,

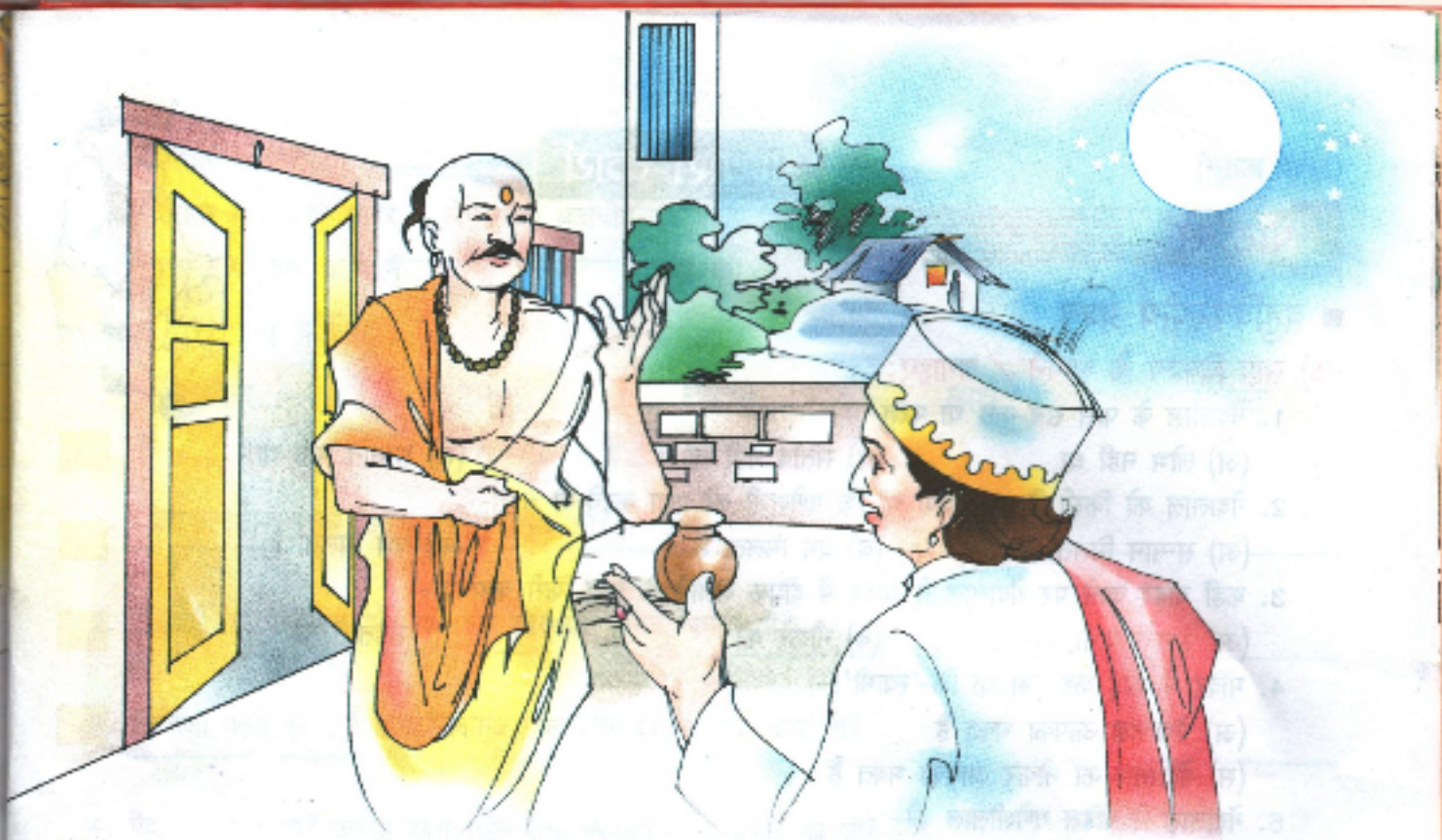

यह वह नहीं देख सका। उसने टटोलने के लिए आले में हाथ डाला। लेकिन हाथ वहीं चिपक गया। गेंदालाल ने जोर लगाकर खींचा, वह उछला-कूदा और छटपटाया लेकिन हाथ नहीं छूटा।

उसी समय मंदिर से फिर बातचीत की आवाज आयी। कोई कह रहा था –'स्वामी! आज पंडितजी को एक सहस्त्र रुपए देने हैं। आप आज्ञा दें तो रुपए की थैली मैं बाहर वाले आले में रख दूँ?'

गणेशजी बोले- 'ऋद्धि देवी! पाँच सौ रुपए पंडित गणेशीलाल को मैंने रात में दिलवा दिए। अब आले में कंजूस गेंदालाल का हाथ चिपका दिया है। जब तक वह बाकी पाँच सौ रुपए पंडितजी के घर नहीं भिजवाएगा, उसका हाथ नहीं छूटेगा।'

गेंदालाल यह सुनकर चिल्लाया- 'गणेशजी महाराज! आपकी पूजा करने से मुझे यही लाभ हुआ? आप मेरी दुर्गति करेंगे यह मैं कहाँ जानता था! अब तो आप मुझे क्षमा करो।'

मंदिर से गणेशजी बोले- 'तू मेरे साथ भी सौदा करता है। क्या तू समझता है कि मैं भी लोभी हूँ? मैं कंजूस, अधर्मी, लोभी की पूजा स्वीकार नहीं करता। लेकिन तूने बहुत दिनों मेरी पूजा की है, वह व्यर्थ नहीं जाएगी। उसके फल से तेरा लोभ छूट जाएगा।'

गेंदालाल का हाथ तभी छूटा, जब उसने शेष पाँच सौ रुपए भी पंडितजी के घर भिजवाने का वादा किया। सवेरे नौकर के आने पर पाँच सौ रुपए उसने पंडितजी के घर भिजवा दिए।

**शब्दार्थ** स्वामी = आराध्य देव, मालिक। बड़ी भारी = बहुत विशाल। कृपण = कंजूस। एक सहस्त्र = एक हजार। विनम्रता से = विनयपूर्वक।

# अभ्यास-कार्य

## पाठ से

### ■ बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) सही विकल्प के सामने ✓ लगाइए :

1. गेंदालाल के पास सब-कुछ था परंतु-
   (अ) लोभ नहीं था ☐ (ब) संतोष नहीं था ☐ (स) सम्मान नहीं था ✓
2. गेंदालाल को किसी ने बता दिया था कि गणेशजी की पूजा करने से बहुत-
   (अ) सम्मान मिलता है ☐ (ब) धन मिलता है ✓ (स) यश मिलता है ☐
3. कहीं बाहर जाने पर गेंदालाल ने मंदिर में दीपक जलाने के लिए किसे कहा था-
   (अ) अपनी पत्नी को ☐ (ब) नौकर को ✓ (स) पंडितजी को ☐
4. मंदिर में कोई कह रहा था कि-'स्वामी'!-
   (अ) गेंदालाल आपका भक्त है ☐ (ब) गणेशीलाल आपका भक्त है ✓
   (स) गेंदालाल का नौकर आपका भक्त है ☐
5. गेंदालाल ने पंडित गणेशीलाल को-
   (अ) कुछ नहीं दिया ☐ (ब) पाँच सौ रुपए दिए ☐ (स) एक हजार रुपए दिए ✓

(ख) रेखा खींचकर परस्पर संबद्ध वाक्यांशों का सुमेल कीजिए :

| | |
|---|---|
| 1. गेंदालाल सायं के समय | (य) कि गणेशजी की पूजा करने से बहुत धन मिलता है। |
| 2. गेंदालाल को ज्ञात हुआ था | (अ) कुछ नहीं माँगा था। |
| 3. पंडितजी ने कभी किसी से | (द) गणेशजी के सामने दीपक जलाता था। |
| 4. गेंदालाल ने गणेशीलाल को पुकारकर | (ब) किवाड़ खुलवाए। |
| 5. लोभ के मारे गेंदालाल को | (स) रात भर नींद ही नहीं आई। |

(ग) सही कथन के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ लगाइए :

1. पंडित गणेशीलाल को पता था कि भगवान गणेश उसे रुपए भिजवाएँगे। ✓
2. पंडितजी को भगवान पर भरोसा था कि वे सबका हित करते हैं। ✓
3. मंदिर में हुई बातचीत पंडितजी ने ही करवाई थी। ✗
4. मंदिर में हुई बातचीत पंडितजी ने भी सुनी थी। ✗
5. गणेश भगवान ने पंडितजी से रुपयों का प्रबंध करने का वादा किया था। ✗

(घ) उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :

1. पंडितजी की पत्नी को बेटी के ब्याह की बहुत चिंता रहती थी। (पंडितजी/पंडितजी की पत्नी)
2. पंडितजी को भगवान गणेश पर पूरा भरोसा था। (सेठ गेंदालाल/भगवान गणेश)
3. गेंदालाल के घर के सामने कुआँ था। (बाग/कुआँ)

4. गेंदालाल गणेशजी पर कनेर के फूल चढ़ाया करता था। (गुलाब/कनेर)

5. गेंदालाल ने छिपकर मंदिर में होने वाली बातचीत सुनी। (देखी/सुनी)

6. गेंदालाल का हाथ आले में चिपक गया था। (फँस/चिपक)

■ शुद्ध उच्चारण कीजिए :

कृपण | विनम्रता | सहस्त्र | व्यर्थ | संतुष्ट

■ इनके उत्तर लिखिए :

1. पंडित गणेशीलाल का दैनिक कार्यक्रम क्या था? पंडित गणेशीलाल प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल तालाब में स्नान करके भगवान गणेशजी की पूजा किया करते थे।

2. पंडितजी को पत्नी की कौन-सी बात बार-बार सुननी पड़ती थी? पंडितजी की पत्नी बार-बार कहती थी कि बेटी बड़ी हो गई है अब इसके ब्याह के लिये कुछ रुपये इंतजाम करो।

3. पंडितजी पत्नी को क्या कहकर संतुष्ट करने का प्रयास किया करते थे? पंडितजी पत्नी को कहते थे कि स्वामी मेरे गणेशजी हैं वे मेरी बेटी की शादी के लिये मदद करेंगे।

4. गेंदालाल कौन था? उसका रहन-सहन तथा व्यवहार किस प्रकार का था? गेंदालाल एक कंजूस धनी व्यापारी था। वह किसी भिखारी को दो मुट्ठी भीख भी नहीं देता था।

5. प्रतिदिन मंदिर में जाकर गेंदालाल क्या किया करता था? प्रतिदिन गेंदालाल मंदिर में एक लोटा जल कनेर के फूल चढ़ाया करता था और शाम को दीया दीपक जला दिया करता

6. रात्रि के समय लौटकर आते हुए गेंदालाल ने मंदिर में क्या सुना? रात्रि के समय लौटकर आते हुये गेंदालाल ने भगवान गणेश और उनकी पत्नी की गणेशीलाल के बारे में बातें सुनी

7. मंदिर में बातचीत सुनकर गेंदालाल ने पंडितजी को पाँच सौ रुपए क्यों दिए? मंदिर में बातचीत सुनकर गेंदालाल के मन में 500 रुपये पाने का लालच आया इसलिये गेंदालाल ने पंडितजी को पांच सौ रूपये दिये।

8. गेंदालाल ने पाँच सौ रुपए नौकर के हाथ पंडितजी के पास क्यों भिजवाए? गेंदालाल के लालच ने उसके हाथ आले में चिपका दिये उससे बचने के लिये गेंदालाल ने पांच सौ रुपये पंडितजी के पास भिजवाये।

## भाषा की बात

(क) रेखांकित शब्द का बहुवचन में प्रयोग करते हुए वाक्य पुनः लिखिए :

1. भक्त के सामने देवता प्रकट हो गया।

भक्त के सामने देवताएं प्रकट हो गये।

2. गाँव के बाहर एक तालाब था।

गांव के बाहर बहुत से तालाब थे।

3. बेटी को ब्याहने के लिए कुछ रुपए जुटाओ।
बेटियों को ब्याहने के लिये कुछ रुपये जुटाओ।

4. लोभ के मारे उसे रात भर नींद ही नहीं आई।
लोभ के मारे इनको रात भर नींद ही नहीं आई।

5. पाँच सौ रुपए में आपकी पुत्री का विवाह हो जाएगा।
पांच सौ रुपये में आपकी पुत्रियों का विवाह हो जायेगा।

(ख) निर्देशानुसार चुनकर लिखिए:

1. गेंदालाल बहुत लालची व्यक्ति था। (व्यक्तिवाचक संज्ञा) गेंदालाल
2. पाँच सौ रुपए गिनने में समय कहाँ लगता है? (विशेषण) पांच सौ
3. थैली बाहर के आले में रख दो। (क्रिया) रखना

(ग) पाठ में से छह जातिवाचक संज्ञा चुनकर लिखिए:

मालिक, नौकर, पंडित, व्यापारी, सेठ, लालची

(घ) इन वाक्यों की क्रियाओं का काल लिखिए:

1. आप गणेशजी के बड़े भक्त हैं। वर्तमान काल
2. क्या पाँच सौ रुपए में आपकी पुत्री का विवाह हो जाएगा? भविष्यकाल
3. कल सेठजी कहीं बाहर गए थे। भूतकाल
4. कल मंदिर में दीपक नौकर ने जलाया था। भूतकाल

(ङ) इनके आगे उपयुक्त विशेषण लिखिए:

1. गहरा कुआँ
2. चौड़ा तालाब
3. ईमानदार व्यक्ति
4. नव युवती
5. भला आदमी
6. कंजूस सेठजी

## कुछ करने की बात

(क) मंदिरों में अनेक लोग जाते हैं। भला वे वहाँ से क्या ग्रहण करके आते हैं और उन्हें क्या ग्रहण करना चाहिए?

(ख) क्या लालची, स्वार्थी, अधर्मी की पूजा स्वीकार की जाती है? यदि नहीं तो क्यों? पता करके कक्षा को बताइए।

(ग) भगवान का भक्त होने के लिए चरित्र में किन गुणों का समावेश होना आवश्यक होता है? पता करके कक्षा को बताइए।